• कविताएं...

अंधेरे के विरुद्ध

एक गुफा है तुम्हारे सामने
और गुफा में
रोशनी का एक नगर
खुशबू की एक नदी
और वसन्त में रची हुई
फूलों की एक घाटी...
लगता है तुम्हें
कि बहुत ताकतवर और
रहस्यमय है गुफा का अंधेरा
तुम्हारी हथेली पर कांपती हुई
दीपशिखा के मुकाबले...
पराजित और विजेता होने की
काल्पनिक अनुभूतियों के बीच
एक स्थगित यात्रा से तुम
किसी पर्वत-शिखर की मानिद
ओढे जा रहे हैं
पर्त-दर-पर्त
अवसाद और कुंठा कि बर्फ...
इससे पहले कि यह बर्फ
पाषाण बना दे तुम्हें
और दीपशिखा
जलाने लगे हथेली
बहुत जरूरी है कोई निर्णय...
अंधेरे का आतंक
आखिर की चाह को
अंकुश लगा पायेगा?

■ सुरेश विमल

अमलताश

अमलताश के सुन्दर फूल
झुग्गे से लटके हैं फूल
गरमी में भी खिलजाते हैं
भर जाते डालों पर फूल
दूर दूर से बच्चे आते
स्वर्णिम रूप दिखाते फूल
झुमके से माला से लटके
हमको पास बुलाते हैं फूल
फलियों से औषधि बनती है
उपयोगी अनुपम है फूल
ग्रीष्म ऋतु में खिलते है जब
अति सुन्दर लगते है फूल
अमलताश के सुन्दर फूल
झुग्गे से लटके हैं फूल

■ सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

• चुटकुला...

टीचर- संजू, तुम इतिहास किसे कहते हो?
संजू : सर, जब पुराने जमाने के लोग कोई बड़ा कांड करके मर जाते हैं और हमें अब उन्हें बैठकर याद करना पड़ता है, तो उसे इतिहास कहते हैं।

• जानकारी...

भारत में सबसे ज्यादा कहां बनता है एथेनॉल

आजकल भारत में पेट्रोल के साथ एथेनॉल मिलाने की बात बहुत हो रही है। सरकार चाहती है कि गाड़ियों में इस्तेमाल होने वाले पेट्रोल में ज्यादा से ज्यादा एथेनॉल मिलाया जाए, ताकि तेल के आयात पर खर्च कम हो और किसानों को भी फायदा मिले। इसी वजह से लोग यह जानना चाहते हैं कि आखिर भारत में सबसे ज्यादा एथेनॉल कौन सा राज्य बनाता है। आइए जानते हैं इसके बारे में पूरी जानकारी कि इसमें कौन सा राज्य सबसे आगे है।

महाराष्ट्र है नंबर वन : सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 30 जून 2025 तक भारत की सालाना एथेनॉल बनाने की क्षमता करीब 1,822 करोड़ लीटर है, और इस काम में देश भर की 499 डिस्टिलरी लगी हुई हैं। इनमें से 396 करोड़ लीटर एथेनॉल बनाने की क्षमता के साथ महाराष्ट्र सबसे ऊपर है। इसका कारण है कि महाराष्ट्र में गन्ने की खेती बहुत ज्यादा होती है, और गन्ने से बनने वाले रस से एथेनॉल तैयार किया जाता है। यही वजह है कि यह राज्य एथेनॉल बनाने में सबसे आगे निकल गया है। साथ ही महाराष्ट्र में चीनी मिलें भी बहुत हैं, और यही चीनी मिलें एथेनॉल बनाने का भी काम करती हैं।

महाराष्ट्र के बाद 331 करोड़ लीटर की क्षमता के साथ उत्तर प्रदेश दूसरे नंबर पर है। उत्तर प्रदेश में भी गन्ने की खेती बहुत होती है, इसलिए वहां भी एथेनॉल बनाने का काम तेजी से बढ़ रहा है और उसके बाद 270 करोड़ लीटर के साथ कर्नाटक तीसरे नंबर पर आता है, जहां पर गन्ने के साथ-साथ अनाज से भी एथेनॉल बनाया जाता है।

अब मक्के से भी बन रहा है ज्यादा एथेनॉल : एक और दिलचस्प बात यह है कि अब सिर्फ गन्ने से ही नहीं, बल्कि मक्के से भी बड़ी मात्रा में एथेनॉल बनाया जा रहा है। आंकड़ों के अनुसार, एथेनॉल सप्लाई वर्ष 2025-26 के पहले छह महीनों में देश में कुल एथेनॉल की सप्लाई करीब 515 करोड़ लीटर तक पहुंच गई, जिसमें अनाज आधारित डिस्टिलरियों ने लगभग 333 करोड़ लीटर एथेनॉल की सप्लाई की, और इसमें मक्के से बने एथेनॉल का हिस्सा सबसे ज्यादा रहा। इसका मतलब है कि जिन राज्यों में मक्के की खेती ज्यादा होती है, जैसे मध्य प्रदेश और बिहार, वहां भी एथेनॉल बनाने का काम तेजी से बढ़ रहा है।

आज के समय में दुनिया के कई देश एथेनॉल का इस्तेमाल करते है, दुनिया में सबसे ज्यादा एथेनॉल बनाने के मामले में अमेरिका सबसे आगे है। पूरी दुनिया में जितना भी एथेनॉल बनता है, उसका आधा से ज्यादा हिस्सा करीब 54 प्रतिशत अकेले अमेरिका ही तैयार करता है। दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका में एथेनॉल बनाने के लिए गन्ने का नहीं, बल्कि भारी मात्रा में मक्के का इस्तेमाल किया जाता है। वहां मक्के की खेती बहुत बड़े पैमाने पर होती है, इसलिए वहां की बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियां मक्के से क्लीन फ्यूल यानी एथेनॉल बनाती हैं। एथेनॉल उत्पादन के मामले में ब्राजील दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। ब्राजील और अमेरिका मिलकर पूरी दुनिया का लगभग 80% एथेनॉल अकेले बना लेते हैं।

• ब्रिटिश कहानी

जादूगर मलकान

गतांक से आगे...

धीरे-धीरे गाँव की फसल मुरझा जाएगी। कुओं और तालाबों का पानी सूख जाएगा। गाँव में बीमारियाँ फैल जाएँगी। मैं तुम सबसे ऐसा बदला लूँगा कि तुम कभी न भूल सकोगे।''

उधर गाँव के लोग परेशान थे। रुडी का कहीं पता नहीं चल रहा था।

गाँव की जमीन के नीचे कुछ बौने रहते थे। उन्हें भी मलकान की शरारत का पता था। वे गाँव वालों की मदद करना चाहते थे, लेकिन मलकान के जादुई महल में जाते हुए डरते थे।

एक दिन रुडी के जुड़वाँ बेटे पाल और पीटरकिन पिता की खोज में चले। वे काफी छोटे थे। पाल और पीटरकिन से बौने मिले। उन्होंने कहा, ''बच्चो, हमें मालूम है, रुडी पहाड़ी के अंदर कैद है; पर हम अंदर नहीं जा सकते। हाँ, अंदर पहुँचने का रास्ता खोजने में तुम्हारी मदद जरूर कर सकते हैं।''

वे सब मिलकर रास्ता ढूँढ़ने लगे। पहाड़ी खिसकने से उसमें जगह-जगह दरारें पड़ गई थीं। बौने हर दरार में जाकर देखते थे। एकाएक उन्हें एक दरार में से रोशनी की झलक मिली। इसका मतलब था, दरार एकदम अंदर तक थी। बौनों ने पाल और पीटरकिन से कहा, ''तुम उस दरार में से आगे बढ़ने की कोशिश करो।''

दोनों भाई उस दरार में घुस गए और सँकरे रास्ते पर बढ़ते रहे। पीछे से बौने उन्हें हिम्मत बँधाते रहे।

रास्ता इतना सँकरा था कि बच्चों को अपनी साँस घुटती हुई लगती थी। फिर भी वे सामने दिखती हलकी रोशनी के सहारे बढ़े जा रहे थे। तभी उस दरार से उन्हें अपने पिता रुडी की झलक मिली। दोनों चिल्ला उठे, ''पिताजी!''

आवाज सुनकर रुडी चौंक उठा और इधर-उधर देखने लगा। तभी पाल ने फिर पुकारा। अब रुडी को पता चल गया कि आवाज कहाँ से आ रही थी। उसे दरार में से झाँकते हुए दो चेहरे दिखाई दिए और वह अपने बेटों को पहचान गया। रुडी की आँखों से आँसू टपकने लगे। किसी तरह अपने को सँभालकर उसने बच्चों से पूछा कि वे किस तरह वहाँ तक आ गए थे?

पाल और पीटरकिन ने पिता को पूरी बात बता दी। कहा कि गाँव में सब कितने परेशान हैं। अपने बच्चों को निकट पाकर रुडी खुश भी था और उदास भी। वह उन्हें देख सकता था, पर छू नहीं सकता था। वे पास होकर भी दूर थे। बच्चों के कानों में भी धम-धम की आवाजें आ रही थीं। उन्होंने पूछा, तो रुडी ने कहा, ''इस आवाज को नहीं रोका गया तो सबकुछ नष्ट हो जाएगा। यह एक घड़ी की आवाज है। वह एक ताले में बंद है। ताले की चाबी जादूगर मलकान ने नष्ट कर दी है। मैं इस ताले की चाबी बनाऊँगा। तुम माँ के पास जाओ। उनसे सोना माँगकर लाओ। चाबी के लिए सोना चाहिए। सोने की चाबी से ही जादुई ताला खुल सकेगा।''

रुडी ने बच्चों को पूरी बात समझा दी। पाल और पीटरकिन वहाँ से गाँव लौट आए। बौनों ने उनसे कह दिया, ''तुम लोग आराम से जाओ। हम इस रास्ते की पहरेदारी करते रहेंगे। जब भी आओगे, हम यहीं मिलेंगे।''

दोनों भाई माँ के पास पहुँचे। जल्दी ही पूरा गाँव जान गया कि रुडी का पता चल गया है और वह जादूगर मलकान की कैद में है। जादुई ताले की चाबी बनाने के लिए सोने की तलाश हुई। अब सबको उम्मीद हो गई थी कि रुडी को मलकान की कैद से मुक्त कराया जा सकेगा।

उसी दरार की राह से जाकर पाल और पीटरकिन ने अपने पिता को सोना दे दिया। जब वे उस दरार की राह पिता से बात कर रहे थे तो जादूगर मलकान वहाँ आ गया। उसी समय दरार के आगे का पत्थर गिर पड़ा। दोनों बच्चे मलकान को दिखाई दे गए। उसने झट उन्हें पकड़ लिया।

-जारी

एक दिन रुडी के जुड़वाँ बेटे पाल और पीटरकिन पिता की खोज में चले। वे काफी छोटे थे। पाल और पीटरकिन से बौने मिले। उन्होंने कहा, ''बच्चो, हमें मालूम है, रुडी पहाड़ी के अंदर कैद है; पर हम अंदर नहीं जा सकते। हाँ, अंदर पहुँचने का रास्ता खोजने में तुम्हारी मदद जरूर कर सकते हैं।''

वे सब मिलकर रास्ता ढूँढ़ने लगे। पहाड़ी खिसकने से उसमें जगह-जगह दरारें पड़ गई थीं। बौने हर दरार में जाकर देखते थे। एकाएक उन्हें एक दरार में से रोशनी की झलक मिली...

• रोचक...

लॉन्गाईयरब्येन

लॉन्गाईयरब्येन दुनिया के सबसे उत्तरी छोर पर बसा एक शहर है। यह उत्तरी ध्रुव के बेहद करीब है, जिसके कारण यहां साल के बारह महीने बहुत कड़ाके की ठंड पड़ती है। इतनी तेज ठंड की यहां का तापमान अक्सर -20 से -30 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है। इतनी भयंकर ठंड पड़ने का कारण यहां की जमीन हमेशा मोटी बर्फ की चादर से ढकी रहती है। इस कड़ाके की ठंड में यहां इंसानी शव प्राकृतिक रूप से कभी सड़ नहीं पाते हैं। इसलिए साल 1950 में यहां की सरकार को समझ आया की जो शव दशकों पहले दफनाए गए थे, वे आज तक सड़ नहीं पाए। शवों के न सड़ने पर बीमारी फैलने का खतरा बढ़ जाता है। कड़े कानून के कारण लॉन्गाईयरब्येन में कोई व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार हो जाता है या वह काफी बुजुर्ग हो चुका है तो उसे तुरंत इस शहर को छोड़कर नॉर्वे के मुख्य भाग पर जाना पड़ता है। वहीं के अस्पतालों में उनका इलाज होता है और अगर उनकी मौत हो जाए, तो वही उनका अंतिम संस्कार किया जाता है। ये शहर अपने मौत पर बैन ही नहीं बल्कि और भी कई वजहों से अनोखा है।

• रेलवे स्टेशन

पश्चिम बंगाल में मौजूद एक ऐसा ही रेलवे स्टेशन पिछले कई सालों से बिना नाम के चल रहा है। इसके पीछे की वजह दो गांवों के बीच नाम को लेकर चला आ रहा विवाद है। बांकुरा-मैसग्राम रेल लाइन पर स्थित यह स्टेशन दो गांवों रैना और रैनागढ़ के बीच में पड़ता है। शुरुआत में इस स्टेशन को रैनागढ़ के नाम से जाना जाता था। रैना गांव के लोगों को यह बात पसंद नहीं आई, क्योंकि इस स्टेशन की बिल्डिंग का निर्माण रैना गांव की जमीन पर किया गया था। रैना गांव के लोगों का मानना था कि इस स्टेशन का नाम रैनागढ़ की जगह रैना होना चाहिए।